छायावादी काव्य : अतीत के गौरवगान से राष्ट्रीयता का मण्डन

डॉ0 अमिताभ पाण्डेय

साधारणतः यह समझा जाता है कि अतीत वर्णन वर्तमान संघर्ष से पलायन है। जबकि छायावादी कवियों द्वारा अतीत का अवलोकन पुनरूत्थानवाद का अंग है, जिसके माध्यम से विजित जाति में राष्ट्रीय चेतना का उद्‌भव एवं विकास होता है। वर्तमान जीवन में ह्रास और हीन भावना के तिरोभाव के लिए अतीत को ग्रहण करते हैं। इसके द्वारा देश को नई चेतना नया उत्साह प्रदान किया जाता है। छायावादी काव्य में अतीत प्रेम का यही रूप प्रकट हुआ है। इस तरह अतीत के पुनरूत्थान ने सम्पूर्ण देश में एक जातीय अथवा राष्ट्रीय भावना का सूत्रपात किया है। इस प्रकार हिन्दी काव्य के अतीत वर्णन ने पराजित एवम् हीनभावना से ग्रस्त जाति में आत्म गौरव की प्रतिष्ठा की और राष्ट्रीय चेतना का विकास किया।

अतीत अवलोकन को सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतना का एक रूप कहना अधिक उचित जान पड़ता है। सांस्कृतिक राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति अतीत वर्णन के माध्यम से छायावादी युग में भी हुई । जयशंकर प्रसाद, निराला, रामचरित उपाध्याय, सोहन लाल द्विवेदी, दिनकर आदि कवियों ने अतीत के सौन्दर्य को वर्तमान अधोगति की पृष्ठभूमि पर जीवन चित्र प्रस्तुत किया और राष्ट्रीयता को बहुत बल प्रदान किया।